मित्र गण

मैं संजय एक शराबी हूँ। इस शराबी शब्द को समझने में मुझको 20 वर्ष लग गये। कालेज के दिनों में कभी शराब पीना शुरू हो गया। उसके पश्चात धीरे मात्रा बढ़ने लगी एवं शराब पीने का अन्तराल बढ़ने लगा कुछ समझ में नहीं आया। लेकिन जब शराब के बगैर जीना मुश्किल हो गया एवं 24 घंटे 30 दिन मन में केवल शराब ही शराब ही रहने लगी तब महसूस हुआ कि कुछ गलत है, उस समय भी कुछ ऐसा नहीं लगा कि मैं शराबी हो गया हूँ। कुछ दिन छोड़ देता था फिर कुछ समय पश्चात शुरू हो जाती थी, जब शुरू होती थी तो मात्रा ज्यादा हो जाती थी पहले से, शराब के कारण लोगों का विश्वास जा रहा था, स्वास्थ्य ने जवाब दे दिया था, व्यापार समाप्त हो गया था, निराशा अपने चरम पर थी, मगर शराब से दूर नहीं हो पा रहा था।

उस समय "नव जीवन नशा मुक्ति केन्द्र" के बारे में पता चला और यहाँ आकर नव जीवन का संचार हुआ, नवजीवन में ही ए.ए. के मित्र मिले व शराब और उससे जुड़ी समस्याओं के विषय में उन्होंने बताया और एक दिन के हिसाब से शराब से दूर रहने का प्रयास शुरू हुआ। मित्रों आज मेरे भी एक दिन के हिसाब से केवल 'आज का दिन' शराब से दूर रहता है और इसी एक-एक दिन को ईश्वर के आशीर्वाद व मित्रों के सहयोग से मेरे को 4 वर्ष होने को जा रहे हैं, मैं एक शराबी - आनंदमय खुशहाल जीवन यापन कर रहा हूँ। अपनी बिखरे परिवार की खुशियां जो दूर हो गयी थी वापिस लाने का प्रयास कर रहा हूं।

संजय